हमारी अनुपम वैदिक संस्कृति

अधिवक्ता हरिशंकर पारीक

भारत की वैदिक संस्कृति अलौकिक सार्वभौमिक एवम् सर्वकालिक है। जीवन के आधार शाश्वत नियम यथा कर्म एवम् तर्पण सभी का आधार विज्ञान है। जीवन में सत्य तथा साधनों की शुद्धता, स्वहित से ऊपर उठकर बहुजन हिताय की सोच परमात्म आराधना एवं मोक्ष की कामना, ''सत्यम् शिवम् सुन्दरम्'' की अवधारणा, वैदिक संस्कृति से ही सम्भव हो पायी है।

आज के पढ़े-लिखे नवयुवक युरोप की भौतिक चकाचौंध को देख विदेशी संस्कृति का अनुकरण करने में गर्व अनुभव करने लगे हैं पर वे भूल जाते है कि भारत ही धर्म के मामले में विश्व का जगद्गुरू था। युरोप के जो लोग वैदिक संस्कृति का अनुकरण कर सीधा-सादा जीवन, सादा ढीला-ढाला लिबास, कन्द-मूलफल खाकर जंगलों में कुटिया बनाकर निवास को तथा वैदिक मन्त्रोचार को गड़रियों का गान कहकर हँसी उड़ाते थे उन्होंने भी वैदिक संस्कृति का गंभीर अध्ययन कर इस (संस्कृति) को महान् बताया। मिस्र, बेबीलोनिया, असीरिया आदि के मत-मतान्तरों का उद्भव वैदिक संस्कृति से ही है।

मैक्सिको एवम् दक्षिण अमेरिका की संस्कृति पर वेदों का ही प्रभाव है। वैदिक संस्कृति का अध्ययन करने से युरोपीय विद्वानों की नींद उड़ी और मुक्तकण्ठ से इसकी प्रशंसा की, जर्मन विद्वान् मैक्समूलर ने वेदों के उच्च आदर्श को देख अपने जीवन के ४५ वर्ष उनके अंग्रेजी अनुवाद में लगाये ताकि युरोप में लोग वेदों की महत्ता को जान सके। उन्होंने लिखा कि विद्यमान ग्रन्थों में वेद सबसे प्राचीन है। ये यूनान की होमर की कविताओं से भी अधिक प्राचीन हैं क्योंकि इसमें मानव मस्तिष्क की प्रथम उपज मिलती है। युरोप के ही सुप्रसिद्ध दार्शनिक मेटरनिक ने कहा कि - वेद ही एकमात्र ज्ञान का भण्ड़ार है, जिसकी तुलना नहीं हो सकती। शिकागो सर्वधर्म सम्मेलन में स्वामी विवेकानन्द जी का शून्य(जीरो) से शुरु सम्मोहित कर देने वाला सम्बोधन कौन भुला पायेगा? जिसे सुनकर युरोपीय विद्वानों को कहना पड़ा कि भारत में मिशनरियों को ले जाना मुर्खता है। ऐसी है हमारी वैदिक संस्कृति।

साहित्याचार्य
ज्योतिषाचार्य,
विद्याधर नगर, जयपुर